हिन्दीसमिति-ग्रन्थमाला—४४

हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन

लेखिका

श्रीमती वीणापाणि पाण्डे,

एम० ए०, पी-एच० डी०

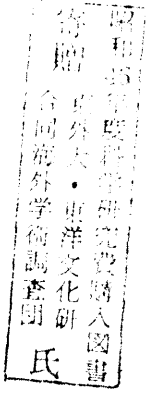

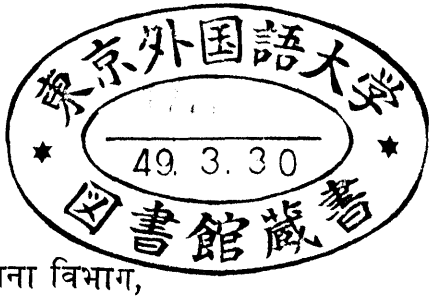

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग,

उत्तर प्रदेश

विषय सूची

अध्याय पृष्ठ

आमुख – ९ –

१. हरिवंश––खिल या पुराण १

२. कृष्णचरित्र ९

भारतीय तथा पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार कृष्ण का व्यक्तित्व ९; हरिवंश तथा अन्य पुराणों के कृष्णचरित्र की तुलना १५; हरिवंश में कृष्णचरित्र ३७।

३. प्रक्षिप्त प्रसंग ४३

श्राद्ध-माहात्म्य ४४; आर्या एकानंशा ४८; रामावतार-वर्णन और रामायण ४९; पारिजात-हरण ५१; ब्रह्मगार्ग्य ५४; द्वारका नगरी का समुद्र-मज्जन ५४; बलदेवाह्निक ५५; द्विविद-वध ५६; बदरिकाश्रम में कृष्ण का तप ५७; पौण्ड्रक-वासुदेव और हंस-डिम्भक ६१।

४. हरिवंश का कालनिर्णय ६३

हरिवंश के आंतरिक प्रमाण ६६; बाहरी प्रमाण ८४; विद्वानों के विचार ९६; हरिवंश तथा अन्य पुराण १००।

५. धार्मिक और सामाजिक रूपरेखा १०७

हरिवंश में शैव वैष्णव और शाक्त सम्प्रदाय १०८; अन्य धार्मिक विचारधाराएँ ११२; हरिवंश में कृष्णचरित्र का सामाजिक अध्ययन ११४; हरिवंश की स्मृति-सामग्री ११६; हरिवंश में वर्णाश्रमधर्म का स्वरूप १२१; रजि का वृतान्त १२५; अन्य पुराणों से तुलना १२५; (पुराणों में अवतारों की संख्या १३१; पुराणों में शाक्त विचारधारा; १३२; पुराणों में स्मृतिसामग्री; १३३; पुराणों के वंश-वर्णन में वर्णाश्रमधर्म १३९; पुराणों में कलिधर्मनिरूपण १४३); पुराणों में रजि का वृत्तान्त १४४; विद्वानों के मत १४६।

अध्याय पृष्ठ

६. ललित कलाएँ १४९

हरिवंश में नृत्य, संगीत तथा नाटक १५०; हरिवंश के नाटक १५४; हरिवंश के नाटक तथा पाश्चात्य मत १६०; हरिवंश तथा अन्य पुराण १६५; हरिवंश में वास्तुकला १६७; पुराणों में वास्तुकला तथा मूर्तिकला १८४।

७. ऐतिहासिक परम्पराएँ १९४

क्षत्रिय राजवंश-परम्रपाएँ १९७; इक्ष्वाकु वंश २००; अजमीढ वंश २०३; अनेनस् का वंश २०७; काशी राजवंश २०९; पूरु-वंश-कक्षेयुवंश-अंगवंश २११; मगध राजवंश २१८; तुर्वसुवंश-पूरुवंश २२१; यदुवंश २२२; वृष्णिवंश २२८; सात्वत वंश २२९; औदभिज्ज सेनानी २३१; ब्राह्मण ऐतिहासिक परम्पराएँ २३४; (वसिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, भार्गव वसिष्ठ विश्वामित्र, विश्वामित्र का वंश), हरिवंश पुराण का ऐतिहासिक महत्त्व २४३;

८. दार्शनिक तत्व २४६

हरिवंश में दार्शनिक तत्त्व की विशेषताएँ २४८; (सांख्य, योग); हरिवंश में पाञ्चरात्र का अभाव २५९; हरिवंश तथा अन्य पुराण २६२; पुराणों में अवतार २७४।

राजवंशों की सूची २८८

सहायक पुस्तकों की सूची ३२३

शुद्धिपत्र ३३०

अनुक्रमणिका ३३३

आमुख

भारतीय बुद्धि तथा कला को पुराणों में बहुत प्राचीन काल से संरक्षण मिला है। भारतीय जीवन के प्रतिबिम्ब होने के कारण पुराणों में इस देश के साहित्य तथा संस्कृति का अविकृत रूप मिलता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण हरिवंश अन्य पुराणों की भाँति अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। हरिवंश में महाभारत के खिल (Appendix) के साथ पुराणतत्त्व का समन्वय हुआ है। अतः साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से हरिवंश एक महत्त्वपूर्ण पुराण है।

विद्वानों का ध्यान दूसरे पुराणों की अपेक्षा हरिवंश की ओर कम आकृष्ट हुआ है। सम्भवतः अठारह महापुराणों तथा अठारह उपपुराणों में हरिवंश की गणना न होने के कारण यह पुराण अधिकांश विद्वानों की दृष्टि से वंचित रह गया। किन्तु सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद हरिवंश में सभी पौराणिक तत्त्व विद्यमान दिखलाई देते हैं। हरिवंश में इन तत्त्वों की उपस्थिति देखकर कुछ विद्वानों ने इसे भी पुराणों के समकक्ष स्थापित किया है। फरक्युहर ने हरिवंश की गणना महापुराणों में करके इसको बीसवाँ महापुराण माना है[1]। विण्टरनित्स ने हरिवंश को खिल के अतिरिक्त पुराण के रूप में स्वीकार किया है[2]। हापकिन्स ने महाभारत के अध्ययन के लिए अनेक स्थलों पर हरिवंश से तुलना की है। हापकिन्स के अनुसार हरिवंश महाभारत के अर्वाचीनतम पर्वों में एक है[3]। श्री हाज़रा ने हरिवंश के कृष्णचरित्र के अन्तर्गत रास के आधार पर हरिवंश को चतुर्थ शताब्दी के लगभग का पुराण माना है[4]। विद्वानों ने केवल तुलनात्मक अध्ययन के दृष्टिकोण से ही हरिवंश का उल्लेख किया है। विष्णु, भागवत, देवीभागवत, मत्स्य तथा वायु पुराणों की भाँति हरिवंश के सर्वांगीण अध्ययन की ओर विद्वानों का ध्यान नहीं गया। अतः अध्ययन के लिए हरिवंश में व्यापक क्षेत्र है।

1. Farquhar. Outlines Rel. Lit. p. 136
2. Winternitz. His Ind. Lit. Vol. 1 p. 454
3. Hopkins: GEI p. 387
4. Hazra: Pur. Rec. p. 23.